उलझन की सुलझन

बात उस समय की है जब मैं 15 या 16 साल का था। ग्रामीण परिवेश में लालन-पालन हो रहा था। समाज के प्रबुद्ध वरिष्ठ जन संस्कृति व सामाजिक व्यवस्था के बारे में हम सभी नव युवकों को बताया करते थे। उनकी एक अलग ही व्यवस्था थी। शाम के समय एक जगह दस-पाँच लोगों का समूह चौपाल पर व सर्दी के दिनों में अलाव जलाकर आस-पास बैठकर समाज के नियम, रीति-रिवाज आदि से अवगत कराया जाता था। किसी समस्या का निदान किस तरह से करना है। उसी समय एक समस्या के निवारण हेतु एक लोक कथा सुनाई गई। मुझे वह बहुत अच्छी लगी कि कथाकार ने उलझी हुई गुत्थी को कितनी आसानी से सुलझा दिया। एक सबल व्यक्ति द्वारा अनजाने में किये गये गलत काम को बताया गया तथा उस गलत कार्य को कैसे रोका जाये, एक सबल व्यक्ति से कैसे स्पष्टीकरण मांगा जाये तथा उत्पन्न स्थिति से कैसे निबटा जाये, बखूबी बताया गया। प्रस्तुत है उस समय पर कही गयी एक बुन्देली लोक कथा - धर्मपुरी में एक ईमानदार और बुद्धिमान राजा राज्य करता था। उसका एक विश्वास पात्र मंत्री था। मंत्री की शादी हुई थी, मंत्री के घर में पति-पत्नी के अलावा कोई नहीं था। मंत्री को राजकीय कार्य से राज्य के बाहर कुछ दिन के लिए भेजना था। राजा ने मंत्री को बुलाकर कहा कि आपको राजकीय कार्य से कुछ दिन के लिए बाहर जाना है। मंत्री बफादार था बिना किसी ना नुकुर के जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन राजा से एक निवेदन किया कि घर पर मेरी पत्नी अकेली रहेगी, आप उसकी सुरक्षा का इन्तजाम करें। राजा ने सुरक्षा कर्मचारियों को बुला कर आदेश दिया कि मंत्री की पत्नी की उचित सुरक्षा की जाये। राजा के आदेश का पालन किया गया। दो-चार दिन बीत जाने के बाद राजा को ख्याल आया कि मंत्री की पत्नी की सुरक्षा का आश्वासन तो दिया था परंतु सुरक्षा कर्मचारियों द्वारा समुचित सुरक्षा की जा रही है या नहीं चल कर देख लिया जाये। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर साधारण वेश में राजा मंत्री के घर चल दिया। शाम का समय था। घर पर मंत्री की पत्नी अकेली थी। राजा ने दरवाजे की कुन्डी खटखटाई। मंत्री की पत्नी ने दरवाजा खोला। राजा ने अपना परिचय दिया। मंत्री की पत्नी ने सत्कार सहित राजा को आसन प्रदान किया तथा जलपान के लिए पूछा। राजा ने कहा कि आवश्यकता नहीं है। मंत्री की पत्नी अन्दर कमरे में चली गयी। राजा ने मंत्री की पत्नी को देखा तो उसकी सुन्दरता देखकर उसके मन में विचार आया कि मंत्री की पत्नी इतनी सुन्दर और अकेली है, क्यों न इस परिस्थिति का लाभ उठाया जाये। राजा बरामदे से अन्दर जाने लगा। बरामदे में तोते का पिंजरा टंगा हुआ था। तोते ने राजा को गलत उद्देश्य से अन्दर की तरफ जाते देखा तो तोते ने कहा -

"सूरज पश्चिम में उगे, घोड़े को घास खा जाये,
गाँव का राजा चोरी करै तो फिराद कोन नौ जाये"

जैसे ही तोते की बात पर राजा का ध्यान गया, राजा को अपने किये जा रहे कार्य पर अफसोस हुआ कि एक पक्षी को इतना ज्ञान है, मैं तो इन्सान हूँ। इस राज्य का राजा होते हुए यह गलत काम कैसे कर सकता हूँ। राजा को इतना अफसोस हुआ कि राजा की ऊंगली से अंगूठी कब उतर कर जमीन पर गिर गयी, राजा को पता नहीं लगा। राजा तुरन्त ही वापस हुआ व महल में आकर दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गया। कुछ दिनों बाद मंत्री काम पूरा कर वापस आया। वह जिस काम से गया था, राजा को बता दिया। मंत्री घर आया। बरामदे के पास अंगूठी देखकर ठिठक गया। उठाकर देखा, पहचान लिया कि यह तो राजा की अंगूठी है, यहाँ कैसे आयी? पत्नी से पूछा कि यह अंगूठी किसकी है और यहाँ कैसे आयी? मंत्री की पत्नी ने बताया कि एक राजा मेरा हालचाल पूछने आये थे, पूछकर चले गये थे। यह अंगूठी यहाँ कैसे आ गयी, मुझे नहीं पता। उसी दिन से मंत्री और उसकी पत्नी में अनबन हो गयी। यहाँ तक दोनों में बोलचाल बन्द हो गयी। कई दिन हो गये। मंत्री का ससुर जो एक प्रतिष्ठित साहूकार था, ने अपने बेटी-दामाद के समाचार जानने के लिए एक व्यक्ति (नाई) को दामाद के पास कुछ उपहार के साथ भेजा। दामाद के घर पर समाचार मालूम करने आये नाई का अच्छी तरह से स्वागत किया गया। शाम को खाना खिलाया गया। कई तरह के व्यंजन बनाये गये। लेकिन किसी भी सब्ज़ी में नमक नहीं था। खाते समय नाई ने नमक डालकर खाना खाया। जाते समय नाई को यथायोग्य विदाई दी गयी। नाई जब वापस पहुँचा, साहूकार ने सारे समाचार जानने चाहे। नाई ने बताया कि वहाँ पर सब ठीक है, मेरा अच्छी तरह से स्वागत सत्कार किया गया लेकिन एक बात समझ में नहीं आई कि किसी भी सब्ज़ी में नमक नहीं था। साहूकार समझदार था। तुरन्त समझ गया कि कहीं न कहीं कुछ गलत है, तभी तो नाई को बेस्वाद खाना खिलाया गया। एक-दो दिन का समय निकाल कर साहूकार अपने दामाद-बेटी से मिलने गया। साहूकार का भी दामाद ने उचित आदर सत्कार किया। चूंकि मंत्री और राजा में घनिष्ठता थी और उस समय ससुर दामाद के यहाँ खाना नहीं खाता था, इसलिए ससुर के खाने व ठहरने की व्यवस्था राजा ने की। शाम को साहूकार ने राजा, मंत्री दामाद, बेटी को चौपड़ खेलने के लिए आमंत्रित किया। उन दिनों ऐसा रिवाज भी था। किसी भी समस्या का निदान इसी तरीके से किया जाता था। साहूकार ने चौपड़ खेलने वाले पासे हाथ में लिए और कहा कि -

"साहूकार एक ताल खुदायो पानी भरौ चुनिंदा।
निर्मल जाको जल रहे पानी पिये न बन्दा, ये पौबारा"

और पासे ज़मीन पर चल दिये। अब पासे साहूकार के दामाद के पास आ गये। वह साहूकार की कही बात को समझ गया। उसने कहा कि -

"लाख मोल की मुद्रिका, लाख ही मोल बिकाय,
ता पारन हम पायी है सो पानी पिया न जाये, ये पौबारा"

मुद्रिका की बात आते ही राजा को अपनी अंगूठी की याद आ गई, जिसे खो जाने का उसे पता ही नहीं चला था। पासे लेकर राजा ने जो हक़ीक़त में हुई थी कहा कि -

"अलहने से एक चला मुसाफिर अलने किया बसेरा,
पिंजरा में पंछी बोला पानी पिया न तेरा, ये पौबारा"

राजा के द्वारा कही इस बात से सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। अन्त में साहूकार की बेटी ने पासे हाथ में लेकर कहा कि -

"सूर कटारी, बिप्र धन, पतिव्रता की देह,
जीते जी न ले सके मरैं सो चाह कोई लेय, ये पौबारा"

साहूकार की बेटी द्वारा कही इस बात से दामाद बेटी के बीच चल रही अनबन को सुलझा लिया गया। दामाद-बेटी खुशी-खुशी रहने लगे। आज के समय में भी हम इस तरह के अनेक मामले देखते हैं। वर्तमान व्यवस्था शहरी हो गयी है। किसी समस्या का अन्तिम निदान न्यायालय के पास बताया जाता है। लोग छोटे-छोटे मामले लेकर न्यायालय में चले जाते हैं, या फिर खुद निर्णय लेकर गलत कदम उठा लिये जाते हैं। उक्त समस्या जो कहानी में बतायी गयी है, आज के परिवेश में ऐसी स्थिति में हम देखते हैं कि पति-पत्नी में इस तरह की स्थिति आने पर लोग तलाक लेने की बात करने लगते हैं। ग्रामीण परिवेश की यह सौगात हमें ऐसे समय में काम आती है।

✍ प्रभुदयाल,
वरिष्ठ सहायक वित्त सलाहकार, चर्चगेट